# तू कर बंदगी और भजन धीरे धीरे

तू कर बंदगी और भजन धीरे धीरे ।
मिलेगी प्रभु की शरण धीरे धीरे ।

दमन इन्द्रियों का तू करता चला जा ।
तो काबू में आएगा यह मन धीरे धीरे ।
मिलेगी प्रभु की शरण...

सुने कान तेरे सदा वेद वाणी ।
तू कर भागवत का श्रवण धीरे धीरे ।
मिलेगी प्रभु की शरण...

सफर अपना आसान करता चला जा ।
तो छूटेगा आवागमन धीरे धीरे ।
मिलेगी प्रभु की शरण...

तू दुनिया में शुभ काम करता चला जा ।
तू कर शुद्ध अपना चलन धीरे धीरे ।
मिलेगी प्रभु की शरण...

मिलेगा तुझे खोज जिसकी है तुझको ।
धरम से जो होगी लगन धीरे धीरे ।
मिलेगी प्रभु की शरण...

कदम नेक राहों पर धर्ता चला जा ।
मिटेगा यह आवागमन धीरे धीरे ।
मिलेगी प्रभु की शरण...

छडक जल दया का तू सूखे दिलों पर ।
बसेगा ये उजड़ा चमन धीरे धीरे ।
मिलेगी प्रभु की शरण...

लगा मुख को प्याला तू सत्संग वाला ।
मिटा देगा दर्द कुहन धीरे धीरे ।
मिलेगी प्रभु की शरण...

कोई काम दुनिया में मुश्किल नहीं है ।
जो करते रहोगे यतन धीरे धीरे ।
मिलेगी प्रभु की शरण...

दमन इन्द्रियों का तू करता चला जा ।
बना शुद्ध चाल चलन धीरे धीरे ।
मिलेगी प्रभु की शरण...

गुरु सेवा तेरी, तेरी देश भक्ति ।
उठाएगी तेरा वतन धीरे धीरे ।
मिलेगी प्रभु की शरण...

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/946/title/tu-kar-bandagi-aur-bhajan-dheere-dheere-milegi-prabhu-ki-sharan-dheere-dheere

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |